AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

विशेष विद्यालयों के शिक्षकों की मानव मूल्यों के संवर्धन में भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Authors

प्रो. छत्रसाल सिंह

आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा

परविंद कुमार वर्मा

सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय

प्रयागराज, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

विशेष विद्यालयों के शिक्षक दिव्यांग बच्चों में मानव मूल्यों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये शिक्षक विविध शैक्षिक आवश्यकताओं, संप्रेषण बाधाओं तथा सामाजिक पूर्वाग्रहों जैसी विशिष्ट चुनौतियों का सामना करते हुए करुणा, सम्मान एवं सामाजिक समावेशन जैसे मूल्यों के संवर्धन हेतु नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं। वे विद्यार्थियों की क्षमताओं के अनुरूप शिक्षण पद्धतियाँ अपनाकर समावेशी वातावरण का निर्माण करते हैं, जिससे छात्रों में आत्मविश्वास, आत्म–स्वीकृति एवं पारस्परिक संवाद कौशल का विकास होता है। यह लेख विशेष विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है तथा इसे सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण की दिशा में एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रस्तुत करता है। विशेष शिक्षकों को सीमित संसाधनों, अपर्याप्त प्रशिक्षण, एवं दिव्यांगता के प्रति समाज में व्याप्त भ्रांतियों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद वे अनुभवात्मक शिक्षण, सहयोगात्मक गतिविधियों तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन के माध्यम से मूल्यों के संप्रेषण में सफलता प्राप्त करते हैं। यह लेख उनके प्रयासों के व्यापक सामाजिक प्रभाव की भी चर्चा करता है, जैसे रूढ़ियों का विघटन एवं समावेशिता को बढ़ावा देना साथ ही, इसमें नीति–निर्माण हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं, जैसे कि शिक्षक प्रशिक्षण की उन्नति, संसाधनों का समुचित वितरण एवं परिवारों तथा समुदायों के साथ सहभागिता को प्रोत्साहन देना। निष्कर्षतः यह लेख इस बात को रेखांकित करता है कि विशेष विद्यालयों के शिक्षक सहृदय, समावेशी एवं मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द

विशेष शिक्षा, मानव मूल्य, समावेशन, शिक्षक प्रशिक्षण, मूल्याधारित शिक्षा, सामाजिक एकीकरण.

परिचय

विशेष विद्यालयों के शिक्षक विविध अधिगम आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास की संरचना में केंद्रीय भूमिका का निर्वहन करते हैं। ये शिक्षकीय दायित्व पारंपरिक शिक्षण सीमाओं से परे जाकर उन विशिष्ट चुनौतियों का समाधान करता है, जिनका सामना विशेष छात्र करते हैं, तथा सहानुभूति, सम्मान और उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों को शिक्षण प्रक्रिया में समाहित करता है (शर्मा एवं गुप्ता, 2020)।

विशेष शिक्षा के संदर्भ में मानवीय मूल्यों का संवर्धन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि यह छात्रों को

सामाजिक अंतःक्रियाओं को समझने और सार्थक संबंध स्थापित करने में सहायक होता है। शिक्षक मूल्यवान व्यवहारों के उदाहरण प्रस्तुत कर आदर्श के रूप में कार्य करते हैं और छात्रों के भीतर नैतिक सिद्धांतों की समझ विकसित करते हैं। कथा–वाचन, भूमिका–अभिनय एवं सहभागी क्रियाकलापों जैसे सृजनात्मक शिक्षण विधियों के माध्यम से वे मूल्यों को इस प्रकार संप्रेषित करते हैं कि वे छात्रों की क्षमताओं एवं रुचियों के अनुरूप प्रभावशाली रूप में आत्मसात् हो सकें (कौर, 2019)।

इसके अतिरिक्त, विशेष विद्यालयों के शिक्षक परिवारों एवं समुदायों के साथ सहयोगात्मक समन्वय स्थापित कर इन मूल्यों की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं, जिससे विद्यालय एवं गृह परिवेश में सामंजस्य बना रहता है। यह समग्र दृष्टिकोण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि ऐसे शिक्षक न केवल छात्रों को सशक्त बनाते हैं, अपितु उन्हें विविधता एवं व्यक्तित्व की विशिष्टता को स्वीकारते हुए समाज में सकारात्मक योगदान हेतु प्रेरित करते हैं।

विशेष विद्यालयों में शिक्षक की मूल्य–शिक्षा में भूमिका

- **शिक्षा में मानव मूल्य की अवधारणाः** मानव मूल्य वे मूलभूत सिद्धांत हैं जो व्यक्ति के व्यवहार व निर्णय–प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में, ये मूल्य समावेशी एवं सामंजस्यपूर्ण समुदायों की स्थापना का आधार प्रदान करते हैं। रोकीच (1973) के अनुसार, मूल्य दीर्घकालिक आस्थाएँ होती हैं जो क्रियाओं एवं निर्णयों को मार्गदर्शित करती हैं। विशेष विद्यालयों में, जहाँ शिक्षक विविध शारीरिक, मानसिक एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं, ये मूल्य और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।
- **विशेष शिक्षा में मानव मूल्यों का महत्वः** विकलांगता से ग्रसित बालकों को प्रायः सामाजिक कलंक, भेदभाव एवं उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। ऐसे में विशेष विद्यालयों के शिक्षक परिवर्तन के संवाहक (agents of change) की भूमिका निभाते हैं, जैसे किः
  - **सहानुभूति का विकास (Empathy का पोषण):** सहानुभूति का विकास विद्यार्थियों को भिन्नताओं को समझने एवं सम्मान देने हेतु प्रेरित करता है। यह प्रक्रिया उन्हें दूसरों के दृष्टिकोण से संसार को देखने, विविध अनुभवों को स्वीकारने तथा सांस्कृतिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत पृष्ठभूमियों को मान्यता देने में सक्षम बनाती है। इससे करुणा, सहिष्णुता एवं स्वीकार्यता की भावना का विकास होता है, जो पारस्परिक सौहार्द्र को बढ़ावा देती है और पूर्वग्रहों को कम करती है।
  - शिक्षक समावेशी वातावरण निर्मित कर, अर्थपूर्ण संवाद की व्यवस्था करके एवं सहभागितात्मक गतिविधियाँ अपनाकर विद्यार्थियों को विविधता को आत्मसात करने हेतु प्रेरित करते हैं। इससे वे एक उदार एवं सहानुभूतिशील दृष्टिकोण विकसित करते हैं, जो समाज में समानता, सहयोग एवं समझ का आधार बनता है।
  - **आत्मविश्वास का निर्माणः** विद्यार्थियों को सामाजिक चुनौतियों से निपटने हेतु आवश्यक कौशलों एवं मूल्यों से सशक्त बनाना, समालोचनात्मक चिंतन, भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा अनुकूलन क्षमता के विकास के साथ–साथ करुणा, नैतिकता एवं उत्तरदायित्व की भावना का संप्रेषण करना आवश्यक है। यह समग्र दृष्टिकोण उन्हें वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान करने, समावेशिता को प्रोत्साहित करने तथा एक अधिक न्यायसंगत एवं सतत् समाज के निर्माण में सक्रिय योगदान देने हेतु सक्षम बनाता है।
- **सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देनाः** विविधता को महत्व देने वाले समावेशी परिवेश की संरचना के अंतर्गत विभिन्न पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों एवं क्षमताओं वाले व्यक्तियों के मध्य परस्पर सम्मान, समझ एवं सहयोग की भावना को विकसित करना आवश्यक है। यह समभाव, समान अवसरों की उपलब्धता, पारस्परिक स्वीकृति को बढ़ावा देने तथा भिन्नताओं का उत्सव मनाकर एक समरस और सशक्त समुदाय के निर्माण का आधार प्रस्तुत करता है।

विशेष विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अनुभव की जाने वाली चुनौतियाँ

- **प्रशिक्षण का अभावः** अनेक विशेष विद्यालयों के शिक्षक अपने शिक्षण में मूल्य–आधारित शिक्षा को समाहित

करने हेतु समुचित प्रशिक्षण से वंचित रहते हैं। शर्मा एवं सिंह (2020) के अनुसार, विशेषीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अनुपलब्धता शिक्षकों की नैतिक एवं चारित्रिक विकास से संबंधित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को संबोधित करने की क्षमता को सीमित कर देती है।

- **संसाधनों की कमी**: विशेष विद्यालयों में प्रायः बजटीय सीमाएँ एवं संसाधनों की न्यूनता पाई जाती है, जिससे मानवीय मूल्यों को संवर्धित करने वाली गतिविधियों के क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न होती है। इनमें शिक्षण सामग्री की अपर्याप्तता, तकनीकी सहायताओं का अभाव एवं कर्मचारियों की कमी जैसे पहलू सम्मिलित हैं।
- **भावनात्मक थकानः** विशेष शिक्षा का श्रमसाध्य स्वरूप शिक्षकों में भावनात्मक थकान उत्पन्न कर सकता है। गुप्ता इत्यादि (2019) के एक अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि विशेष शिक्षकों द्वारा अनुभव किया जाने वाला उच्च स्तर का तनाव एवं मानसिक अवसाद उनके विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों का प्रभावी रूप से समावेशन करने की क्षमता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है।
- **सामाजिक दृष्टिकोणः** विकलांगता के प्रति समाज में व्याप्त नकारात्मक धारणाएँ प्रायः अतिरिक्त बाधाओं का सृजन करती हैं। शिक्षकों को इन पूर्वग्रहों का प्रतिरोध करते हुए विद्यार्थियों में आत्म–मूल्यबोध एवं गरिमा की भावना संचित करनी होती है।

विशेष विद्यालयों में मानव मूल्यों के संवर्धन हेतु रणनीतियाँ

- **समावेशी शिक्षण पद्धतिः** समावेशी शिक्षण विधियों को अपनाना विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए सम्मान, समता जैसे मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करता है। ''यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग'' (यूडीएल) रूपरेखाएं शिक्षकों को ऐसा लचीला अधिगम परिवेश निर्मित करने की रणनीतियाँ प्रदान करती हैं, जो सभी शिक्षार्थियों की विशेषताओं के अनुरूप हों।
- **अनुभवजन्य अधिगमः** भूमिका–निभारण, समूह संवाद, एवं कथा–वाचन जैसी अनुभवात्मक शिक्षण गतिविधियाँ विद्यार्थियों में मूल्यों का आत्मसात कराने में सहायक सिद्ध होती हैं। उदाहरणस्वरूप, दयालुता एवं सत्यनिष्ठा जैसे विषयों पर आधारित कथाएँ बाल–मन पर गहरी छाप छोड़ सकती हैं।
- **परिवारों के साथ सहयोगः** मूल्य–शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों को अभिभावकों एवं संरक्षकों के साथ समन्वय स्थापित करना आवश्यक है। ब्रॉनफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत (1979) के अनुसार, किसी बालक का विकास बहुस्तरीय परिवेशों जैसे परिवार, विद्यालय एवं समुदाय से प्रभावित होता है, अतः पारिवारिक सहभागिता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। माता–पिता प्राथमिक अनुकरणीय होते हैं, जो प्रारंभिक अवस्था से ही बालकों के व्यवहार, दृष्टिकोण एवं मूल्यों को आकार प्रदान करते हैं। विद्यालयीन मूल्य–शिक्षा को पारिवारिक जीवन–पद्धति से समरस कर एक समेकित अधिगम वातावरण निर्मित किया जा सकता है। इस हेतु अभिभावक–शिक्षक सम्मेलन, कार्यशालाएँ तथा सामूहिक नैतिक कथा–वाचन जैसी सहभागिता–आधारित गतिविधियाँ सेतु–सदृश कार्य करती हैं। यह समवेत प्रयास बालकों के सर्वांगीण एवं नैतिक विकास को सुनिश्चित करता है।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोगः** सहायक प्रौद्योगिकियाँ शिक्षण अनुभव को उल्लेखनीय रूप से समृद्ध बना सकती हैं, क्योंकि ये शिक्षकों को मानवीय मूल्यों के प्रभावी संप्रेषण हेतु अंतःक्रियात्मक एवं आकर्षक उपकरण प्रदान करती हैं। उदाहरणार्थ, ऐसी मोबाइल अनुप्रयोग (ऐप्स) जो वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का अनुकरण करती हैं, छात्रों को नैतिक दुविधाओं में निर्णय–निर्णयन, सहानुभूति तथा नैतिक तर्कशीलता का अभ्यास करवा सकती हैं। आभासी वास्तविकता (Virtual Reality) आधारित परिवेश विविध संस्कृतियों की समझ को बढ़ावा देकर समावेशन एवं सहिष्णुता को प्रोत्साहित करते हैं। इसी प्रकार, गेम आधारित मंच (Gamified Platforms) सहयोग, दलभावना एवं भिन्न दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को विकसित करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित वैयक्तिकीकृत अधिगम प्रणाली छात्रों के मूल्यों एवं रुचियों के अनुरूप सामग्री को अनुकूलित करके उन्हें अधिक गहनता से संलग्न करती हैं। ये नवाचार शिक्षकों को मूल्याधारित एवं अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव निर्मित करने में समर्थ बनाते हैं।

- **आदर्श प्रस्तुतिकरण की भूमिका:** शिक्षकों को स्वयं उन मूल्यों का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए जिन्हें वे विद्यार्थियों में स्थापित करना चाहते हैं। बंड्यूरा (1977) के सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Social Learning Theory) के अनुसार व्यवहार निर्माण में अनुकरण की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- **सहृदयता संवर्धन हेतु सहपाठी सहभागिता:** दिल्ली स्थित एक विशेष विद्यालय में शिक्षकों ने "सहपाठी प्रणाली" (Buddy System) लागू की, जिसके अंतर्गत दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों हेतु जोड़ा गया। इस पहल ने न केवल परस्पर सहानुभूति एवं समझ को प्रोत्साहन दिया, अपितु सभी विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में भी उल्लेखनीय वृद्धि की।
- **कलाओं के माध्यम से मूल्यों का समावेशन:** केरल के एक विशेष विद्यालय ने धैर्य, सहयोग एवं निरंतरता जैसे मूल्यों की शिक्षा हेतु कला–आधारित पाठ्यक्रम प्रारंभ किया। छात्रों ने भित्तिचित्र (Murals) एवं रंगमंचीय प्रस्तुतियों जैसे सामूहिक प्रकल्पों में सहभागिता कर वास्तविक जीवन में इन मूल्यों का अभ्यास किया।

मानव मूल्यों के संवर्धन का प्रभाव

1. **आत्म–सम्मान में वद्धि:** विद्यार्थियों में आत्म–छवि सकारात्मक होती है एवं वे स्वयं को महत्व देना सीखते हैं।
2. **सामाजिक कौशल में सुधार:** मूल्य–आधारित शिक्षा विद्यार्थियों की सामाजिक सहभागिता की दक्षता को प्रबल करती है।
3. **नैतिक विकास:** इससे विद्यार्थियों को एक सुदृढ़ नैतिक अधिष्ठान प्राप्त होता है जो उनके आचरण का पथदर्शन करता है।

समाज पर प्रभाव

विशेष विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा मानव मूल्यों के संवर्धन हेतु किए गए प्रयास समावेशी एवं करुणाशील समाज की स्थापना में सहायक सिद्ध होते हैं। ये शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों को सशक्त बनाकर सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देते हैं तथा सामाजिक स्वीकृति एवं समरसता को प्रोत्साहित करते हैं।

नीतिगत अनुशंसाएँ

1. **शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम:** सरकारों एवं शैक्षिक संस्थानों को विशेष विद्यालयों हेतु मूल्य शिक्षा पर केंद्रित विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकास करना चाहिए। इन पाठ्यक्रमों में भावनात्मक बौद्धिकता (Emotional Intelligence), समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ, तथा संघर्ष समाधान कौशल जैसे विषयों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
2. **संसाधनों की वद्धि:** विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अधिक वित्तीय निवेश द्वारा भौतिक अवसंरचना एवं शैक्षिक सामग्री की कमी को दूर किया जा सकता है, जिससे शिक्षक मूल्य–आधारित पहलों को प्रभावशाली रूप से क्रियान्वित कर सकें।
3. **सामुदायिक सहभागिता:** विशेष विद्यालयों में जनसामान्य की भागीदारी को प्रोत्साहित कर सामाजिक कलंक (stigma) को समाप्त किया जा सकता है। जनजागरूकता अभियानों एवं स्वयंसेवी कार्यक्रमों के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों और समाज के अन्य वर्गों के मध्य सेतु निर्माण किया जा सकता है।
4. **अनुसंधान एवं नवाचार:** विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देकर विविध क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के अनुरूप मूल्य शिक्षा की प्रभावी शिक्षण रणनीतियों की पहचान की जा सकती है। इस दिशा में नवोन्मेषी पद्धतियाँ विकसित कर सहानुभूति, सम्मान, एवं उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों पर केंद्रित समावेशी पाठ्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, शैक्षणिक संस्थानों एवं विशेष विद्यालयों के मध्य साझेदारी ज्ञान के आदान–प्रदान का माध्यम बन सकती है, जहाँ दोनों क्षेत्रों के विशेषज्ञ प्रमाण आधारित हस्तक्षेपों (evidence-based interventions) के निर्माण हेतु सहयोग करें। संसाधनों, विशेषज्ञता, एवं श्रेष्ठ प्रथाओं के साझा उपयोग द्वारा यह सहयोगात्मक तंत्र विशेष आवश्यकता

वाले विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ करेगा एवं उनके नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक सिद्ध होगा।

निष्कर्ष

विशेष विद्यालयों के शिक्षक नैतिक एवं चारित्रिक विकास में विशेष रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीमित संसाधनों, विविध शिक्षण आवश्यकताओं तथा सामाजिक भ्रांतियों जैसी अनेक चुनौतियों के बावजूद ये शिक्षक सतत रूप से नवाचारी एवं व्यक्तिगत रणनीतियों का प्रयोग कर सहानुभूति, सम्मान एवं उत्तरदायित्व जैसे मौलिक मानवीय मूल्यों का संवर्धन करते हैं। इनकी प्रतिबद्धता केवल शैक्षिक अनुशासन तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे सामाजिक कौशल, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सहभागिता की भावना का भी पोषण करते हैं, जिससे दिव्यांग बालक आत्मविश्वासी, संवेदनशील एवं नैतिक दृष्टि से समृद्ध व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें। इन शिक्षकों का प्रभाव केवल विद्यालय तक सीमित न रहकर समाज में समावेशी एवं स्वीकार्य वातावरण के निर्माण में भी योगदान देता है। इस महत्त्वपूर्ण दायित्व को सफलतापूर्वक निभाने हेतु आवश्यक है कि इन शिक्षकों को व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विशिष्ट संसाधनों की उपलब्धता एवं सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सशक्त किया जाए। जब विशेष विद्यालयों के शिक्षकों को उपयुक्त साधनों एवं समर्थन से सशक्त किया जाएगा, तब न केवल उनकी प्रभावशीलता में वृद्धि होगी, बल्कि समावेशी एवं मूल्यपरक समाज के निर्माण की दिशा में भी सार्थक प्रगति सुनिश्चित हो सकेगी।

सन्दर्भ सूची

1. एडेनयी, एस. ओ.; एवं ओलातुंजी, ओ. ए. (2021) कार्य प्रेरणा और छात्र–शिक्षक संबंधों के संदर्भ में विशेष शिक्षा शिक्षकों का तनाव अनुभव, *द ओपन साइकोलॉजी जर्नल,* 14(1), 300–312, https://doi.org/10-2174/1874350102114010300
2. बर्गमार्क, यू. (2007) दूसरों के साथ मिलकर नैतिक शिक्षा प्राप्ति, *अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन पत्रिका,* 14, 105—112।
3. गांधी, म. म. (2014) उच्च शिक्षा में मूल्य अभिमुखीकरण – विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की चुनौतियाँ एवं भूमिकाः अतीत और भविष्य की दिशा, *अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और मानसिक विज्ञान पत्रिका (IJEPR),* खंड 3, अंक 1, पृ. 226—231।
4. गुप्ता, र.; शर्मा, प.; वर्मा, स. (2019) विशेष शिक्षक में भावनात्मक थकावटरू कारण और मुकाबला रणनीतियाँ, *विशेष शिक्षा अनुसंधान पत्रिका,* 15(2), 45—59.
5. कालिता, क. (2015) मूल्य और शिक्षक की भूमिका की आवश्यकता, *अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान और मानविकी अनुसंधान पत्रिका,* आईएसएसएन 2348—3164, खंड 3, अंक 4, पृ. 566—571।
6. कौर, स. (2019) विशेष शिक्षा पद्धतियों के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा, *समावेशी शिक्षा पत्रिका,* 12(3), पृ. 45—56।
7. केब्बी, एम.; एवं अल—ह्वैब, ए. (2020) विशेष शिक्षा शिक्षकों की भलाई (कल्याण) के समर्थन मेंरू साक्ष्यों की बहुआयामी समीक्षा एवं भविष्य की दिशा, *ऑस्ट्रेलेशियन जर्नल ऑफ स्पेशल एंड इनक्लूसिव एजुकेशन,* 44(2), 123–139, https://doi-org/10-1017/jsi-2020-12.
8. स्क्लावाकी, डी. (2022) विशेष शिक्षा शिक्षकों की समावेशन प्रथाओं के संवर्धन और क्रियान्वयन पर प्रभावशीलता का अध्ययन, *ओपन एक्सेस लाइब्रेरी जर्नल,* 9(7), 1–24, https://doi.org/10-4236/oalib-1109029
9. शर्मा, क.; सिंह, अ. (2020) विशेष विद्यालयों में मूल्य आधारित शिक्षा में चुनौतियाँ, *शैक्षिक समीक्षा त्रैमासिक,* 22(3), 102—118
10. सारी, एच.; एवं अकीओल, ए. के. (2021) भविष्य के शिक्षकों के दृष्टिकोण से शिक्षा में मूल्यों की भूमिका, *सेज ओपन,* 11(2), 21582440211014485, https://doi.org/10-1177/21582440211014485
11. शर्मा, र.; एवं गुप्ता, प. (2020) विशेष शिक्षा में मानव मूल्यः एक शिक्षक का दृष्टिकोण, *अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका,* 18(2), पृ. 78—92।

——==00==——